

दुआ-29

जब रिज़क की तंगी होती तो यह दुआ पढ़ते

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

ऐ अल्लाह! तूने रिज़क के बारे में बेयक्रीनी से और ज़िन्दगी के बारे में तूले अमल से हमारी आजमाइश की है। यहाँ तक के हम उनसे रिज़क तलब करने लगे जो तुझसे रिज़क पाने वाले हैं और उम्र रसीदा लोगों की उम्र देखकर हम भी दराज़िए उम्र की आरज़ूएं करने लगे। ऐ अल्लाह! मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमें ऐसा पुख्ता यक़ीन अता कर जिसके ज़रिये तो हमें तलब व जुस्तजू की ज़हमत से बचा ले और खालिस इत्मीनानी कैफ़ियत हमारे दिलों में पैदा कर दे जो हमें रंज व सख्ती से छुड़ा ले और वही के ज़रिये जो वाज़ेह और साफ़ वादा तूने फ़रमाया है और अपनी किताब में उसके साथ साथ क़सम भी खाई है। उसे इस रोज़ी के एहतेमाम से जिसका तू ज़ामिन है। सुबुकदोशी का सबब करार दे और जिस रोज़ी का ज़िम्मा तूने लिया है उसकी मशगूलियतों से अलाहेदगी का वसीला बना दे। चुनांचे तूने फ़रमाया है और तेरा क़ौल हक़ और बहुत सच्चा है और तूने क़सम खाई है और तेरी क़सम सच्ची और पूरी होने वाली है के "तुम्हारी रोज़ी और वह जिसका तुमसे वादा किया जाता है आसमान में है" फिर तेरा इरशाद है:- "ज़मीन व आसमान के मालिक की क़सम यह अम्र यक़ीनी व क़तई है जैसे यह के तुम बोल रहे हो।"